IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 27, Issue 5, Series 1 (May. 2022) 75-80
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

प्राचीन भारतीय चिन्तन में पर्यावरण संरक्षण एक भौगोलिक अध्ययन

सुनील कुमार गुप्ता,
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, देव नारायण राजकीय कन्या महाविद्यालय, बयाना, भरतपुर (राजस्थान)

शोध सारांश
प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के अनेक घटकों जैसे वृक्षों को पूज्य मानकर उन्हें पूजा जाता रहा है। पीपल के वृक्ष को पवित्र माना जाता है। वट के वृक्ष की भी पूजा होती है। जल, वायु, अग्नि को भी देव मानकर उनकी पूजा की जाती है। हिंदू पौराणिक कथाओं, वेदों, पुराणों, उपनिषदों और हिंदू धर्म के अन्य प्राचीन ग्रंथों में पेड़–पौधों, वन्य जीवन और लोगों के लिए उनके महत्व का विस्तृत विवरण दिया गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति ने ऐसे कृत्यों के लिए दंड का प्रावधान करके पेड़ों को काटने पर रोक लगा दी । प्राचीन भारत में सिन्धु सरस्वती सभ्यता में पर्यावरण संरक्षण के उल्लेख मिलते है जिनमें नगर नियोजन, दुर्ग, साफ–सफाई वृक्ष एवं पौधों की पूजा का उल्लेख मिलता है । आर्य सभ्यता में भी सतत् पर्यावरणीय चेतना की जागरूकता दिखलाई पड़ती है। 'अरण्यानी' जो जंगलों की रानी है वो वैदिक ऋषियों के द्वारा संपोषित होती है । यजुर्वेद में कहा गया है कि वृक्षों को ना काटो । जल और पृथ्वी की रक्षा करना धर्म है। यह भूमि, माता के समान सबकी पोषक है और मैं पुत्र के समान इस भूमि का रक्षक हूँ। भारत में पौधों का लोक महत्त्व भी है इस कारण भी पर्यावरण संरक्षण की भावना रही है भारतीय संविधान में भी पर्यावरण संरक्षण हेतु कानूनों का उल्लेख है। प्रकृति और मानव का अटूट संबंध सृष्टि के निर्माण के साथ ही चला आ रहा है। धरती सदैव ही समस्त जीव–जन्तुओं का भरण–पोषण करने वाली रही है। 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा ।' इन पाँच तत्वों से सृष्टि की संरचना हुई है। बिना प्रकृति के जीवन की कल्पना ही नही की जा सकती। भौतिक युग में जहां विकास के नाम पर मानव ने प्रकृति के सुंदर स्वरूप को क्षति पहुंचा पर्यावरण को ही चुनौती देकर अपने जीवन को ही संकट में डाल दिया है।
मुख्य शब्द :– पर्यावरण का अर्थ व परिभाषा, प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण, हिन्दू धर्म, वेद, उपनिषद और पुराण, रामायण महाभारत व भगवद् गीता, बौद्ध धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म एवं निष्कर्ष ।

परिचय :–

पर्यावरण का संरक्षण केवल स्थानीय या राष्ट्रीय मामला नहीं, बल्कि विश्वव्यापी चिंता का विषय है। तेजी से छोटे होते विश्व में, पर्यावरण प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो सभी देशों को प्रभावित करती है, चाहे उनका आकार, विकास का स्तर या विचारधारा कुछ भी हो। पर्यावरण प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो लंबे समय से मौजूद है। इसकी खोज प्लेटो के समय में, लगभग 2500 वर्ष पहले की गई थी, और यह पृथ्वी पर होमो सेपियन्स की उपस्थिति जितनी ही पुरानी है लेकिन आधुनिक समय में पर्यावरण संरक्षण और इसके प्रबंधन के मुद्दे के विभिन्न पहलुओं ने गंभीर मोड़ ले लिया है। विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है परिणामस्वरूप, उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव है, जिसके कारण हवा, पानी व मिट्टी का प्रदूषण का स्तर बढ़ गया है। तेजी से औद्योगीकरण, ढीले कानूनों या उन नियमों के अकुशल अनुप्रयोग के कारण, प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गई है, खासकर विकासशील देशों में। पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर मुद्दा है जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण का कोई संस्कार अखण्ड भारतभूमि को छोड़कर अन्यत्र देखने में नहीं आता है जबकि सनातन परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण के सूत्र मौजूद हैं । हिन्दू धर्म में प्रकृति पूजन को प्रकृति संरक्षण के तौर पर मान्यता है । भारत में पेड़–पौधों, नदी–पर्वत, ग्रह–नक्षत्र, अग्नि–वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए हैं । पेड़ की तुलना संतान से की गई है तो नदी को मां स्वरूप माना गया है । ग्रह–नक्षत्र, पहाड़ और वायु देवरूप माने गए हैं । प्राचीन समय से ही भारत के वैज्ञानिक ऋषि–मुनियों को प्रकृति संरक्षण और मानव के स्वभाव की गहरी जानकारी थी. वे जानते थे कि मानव अपने क्षणिक लाभ के लिए कई मौकों पर गंभीर भूल कर सकता है । अपना ही भारी नुकसान कर सकता है इसलिए उन्होंने प्रकृति के साथ मानव के संबंध विकसित कर दिए ताकि मनुष्य को प्रकृति को गंभीर क्षति पहुंचाने से रोका जा सके । यही कारण है कि प्राचीन काल से ही भारत में प्रकृति के साथ संतुलन करके चलने का महत्वपूर्ण संस्कार है । यह सब होने के बाद भी भारत में भौतिक विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति पददलित हुई है लेकिन, यह भी सच है कि यदि ये परंपराएं न होतीं तो भारत की स्थिति भी गहरे संकट के किनारे खड़े किसी पश्चिमी देश की तरह होती है । हिन्दू परंपराओं ने कहीं न कहीं प्रकृति का संरक्षण किया है । हिन्दू धर्म का प्रकृति के साथ कितना गहरा रिश्ता है, इसे इस बात से समझा जा सकता है कि दुनिया के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि की स्तुति में रचा गया है ।

प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण :–

भारत में पर्यावरण संरक्षण का इतिहास बहुत पुराना है। हडप्पा संस्कृति पर्यावरण से ओत–प्रोत थी, तो वैदिक संस्कृति पर्यावरण–संरक्षण हेतु पर्याय बनी रही। भारतीय मनीषियों ने समूची प्रकृति ही क्या, सभी प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना। ऊर्जा के स्त्रोत सूर्य को देवता माना तथा उसको 'सूर्य देवो भव' कहकर पुकारा। भारतीय संस्कृति में जल को भी देवता माना गया है। सरिताओं को जीवन दायिनी कहा गया है, इसीलिए प्राचीन संस्कृतियां सरिताओं के किनारे उपजीं और पनपी। भारतीय संस्कृति में केला, पीपल, तुलसी, बरगद, आम आदि पेड पौधों की पूजा की जाती रही है। मध्यकालीन एवं मुगलकालीन भारत में भी पर्यावरण प्रेम बना रहा। अंग्रेजों ने भारत में अपने आर्थिक लाभ के कारण पर्यावरण को नष्ट करने का कार्य प्रारंभ किया। विनाशकारी दोहन नीति के कारण पारिस्थितिकीय असंतुलन भारतीय पर्यावरण में ब्रिटिश काल में ही दिखने लगा था। स्वतंत्र भारत के लोगों में पश्चिमी प्रभाव, औद्योगीकरण तथा जनसंख्या विस्फोट के परिणामस्वरूप तृष्णा जाग गई जिसने देश में विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को जन्म दिया।

पर्यावरण संरक्षण में धर्म की भूमिका :—

धर्म और पर्यावरण में एक गहरा संबंध है तथा सभी धर्मों का दृष्टिकोण प्रकृति के प्रति सकारात्मक रहा है। उदाहरण के तौर पर बौद्ध धर्म का मत है कि सभी जीव—जंतुओं, वनस्पतियों व मनुष्यों का जीवन एक दूसरे से संबंधित हैं इसलिये व्यक्ति को सभी जीवों का सम्मान करना चाहिये। इसी प्रकार बहाई धर्म का मानना है कि प्राकृतिक ऐश्वर्य और विविधता मानव जाति पर ईश्वर की कृपा है, अतः हमे इसकी रक्षा करनी चाहिये। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण तथा भूमंडलीय उष्मन के नियंत्रण हेतु व्यापक प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन इसके माध्यम से पर्यावरणीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की राह अभी भी काफी दूर है। अतः इन लक्ष्यों को जन सामान्य की भागीदारी के माध्यम से संभाव्य बनाया जा सकता है। विश्व के सभी समुदायों में धर्म एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है और बड़ी संख्या में लोग धर्म में आस्था रखते हैं। इसलिये पर्यावरण संरक्षण में धर्म अहम भूमिका निभा सकता है और पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने में मदद मिल सकती है। विभिन्न धर्मों में पर्यावरण संरक्षण हेतु अलग—अलग सुझाव दिये गए हैं जो कि इस प्रकार है—

हिंदू धर्म

हिंदू धर्म मानता है कि इन पांच तत्वों में से प्रत्येक पांच इंद्रियों में से एक से मेल खाता है और वे मानव शरीर का निर्माण करते हैं। मानव जीभ जल से, मानव आंखें अग्नि से, मानव त्वचा वायु से और मानव कान अंतरिक्ष से जुड़ी हुई हैं। मनुष्य के रूप में हम प्राकृतिक दुनिया के साथ कैसे संपर्क करते हैं इसका आधार हमारी इंद्रियों और तत्वों के बीच का संबंध है। हिंदू धर्म में प्रकृति और पर्यावरण हमसे बाहर की चीज़ नहीं हैं।

- ★ हिंदू धर्म में प्रकृति को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है तथा प्रकृति के विभिन्न रूपों को देवी देवताओं का रूप माना गया है। हिंदू धर्म के अनुसार, जीवन पाँच तत्त्वों— क्षिति (पृथ्वी), जल, पावक (अग्नि), गगन (आकाश), समीर (वायु) से मिलकर बना है।
- ★ हिंदू धर्म में पृथ्वी को देवी का रूप माना गया है। इसके अलावा इसके विभिन्न अवयव जैसे— पर्वत, नदी, जंगल, तालाब, वृक्ष, पशु—पक्षी आदि सभी को दैवीय कथाओं व पुराणों से जोड़कर देखा जाता है।
- ★ हिंदू ग्रंथ जैसे— भगवद्गीता में अनेक स्थानों पर कहा गया है कि ईश्वर सर्वव्यापी है तथा विभिन्न रूपों में सभी प्राणियों में विद्यमान है इसलिये व्यक्ति को सभी जीवों की रक्षा करनी चाहिये।
- ★ हिंदू धर्म में कर्म की प्रधानता पर बल दिया जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है। इसके अलावा व्यक्ति के कर्मों का प्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है अतः मानव जाति को प्रकृति तथा उसके विभिन्न जीवों की रक्षा करना चाहिये।
- ★ हिंदू धर्म में पुनर्जन्म (त्मपदबंतदंजपवद) पर विश्वास किया जाता है। इसके अनुसार, मृत्यु के बाद कोई व्यक्ति पृथ्वी पर विद्यमान किस जीव के रूप में जन्म लेगा यह उसके कर्मों पर निर्भर करता है। इसलिये सभी जीवों के प्रति अहिंसा हिंदू धर्म का मुख्य सिद्धांत है।

वेद, उपनिषद और पुराण

वेद, उपनिषद और अन्य शास्त्रीय हिंदू ग्रंथ पौधों, जानवरों और पेड़ों के साथ—साथ लोगों के लिए इन चीजों के महत्व को बहुत महत्व देते हैं। पारिस्थितिक संतुलन, मौसम चक्र, वर्षा की घटनाओं, जल विज्ञान चक्र और अन्य संबंधित विषयों के कई संकेत प्राचीन वेदों में पाए जा सकते हैं, जो स्पष्ट रूप से उस समय के ऋषियों और लोगों की उच्च स्तर की चेतना को प्रदर्शित करते हैं।

वैदिक युग में, लोग प्रकृति और पर्यावरण के प्रति समग्र दृष्टिकोण रखते थे और इसके प्रत्येक भाग और इकाई का सम्मान करते थे और उनके संरक्षण का बहुत ध्यान रखते थे। जीवन को बनाने वाले पांच तत्व – पृथ्वी, जल, अग्नि, अंतरिक्ष और वायु – को ऋग्वेद में सभी जीवन की नींव के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। ऋग्वेद में इसका स्पष्ट संकेत मिलता है।

ऋग्वेद में एक सुरक्षात्मक परत के अस्तित्व का स्पष्ट उल्लेख है, जिसे अब हम ओजोन परत समझते हैं, जो पृथ्वी को सूर्य की हानिकारक किरणों से बचाती है। यजुर्वेद के अनुसार, यज्ञ अग्नि में मक्खन और लकड़ी डालकर यज्ञ करना चाहिए ताकि यह हवा के साथ मिल जाए और आसपास के क्षेत्र को शुद्ध कर दे। आकाश को साफ रखने और जीवन का समर्थन करने वाले जल निकायों के लिए प्रार्थना करने के महत्व का उल्लेख किया गया है। सामवेद, अन्य वेदों की तरह, मौसमी चक्रों को संरक्षित करने के महत्व को स्वीकार करता है, जो अनुचित मानव व्यवहार और जलवायु परिवर्तन के कारण परिवर्तन के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। अथर्ववेद में देने और लेने की एक अलग समझ है, जिसमें कहा गया है कि कोई भी पृथ्वी और वायुमंडल से उतना ही ले सकता है, जितना उन्हें वापस देगा। अथर्ववेद कई अन्य विषयों पर भी जोर देता है, जैसे जल स्वच्छता, वन्यजीवों का संरक्षण और मवेशियों जैसे जानवरों को पालतू बनाना।

प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने पर्यावरण की सुरक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें चाणक्य भी शामिल थे। उनके न्यायशास्त्र के अनुसार, राज्य को जंगलों को बनाए रखने के लिए मजबूर किया गया था, पेड़ों को काटने और जंगलों को नुकसान पहुंचाने के लिए दंड लागू किया गया था, और जंगली जानवरों को आरक्षित जंगलों में रखा गया था जहां मनुष्यों के लिए खतरा होने पर उन्हें मार दिया जाता था या कैद कर दिया जाता था।

वे इसे पर्यावरण विषाक्तता के रूप में संदर्भित करते हैं, भले ही "प्रदूषण" शब्द अभी तक अस्तित्व में नहीं था। उनका तर्क है कि पर्यावरण को बनाने वाले पांच प्राथमिक तत्व – अंतरिक्ष, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी – सभी प्रकृति नामक मौलिक ऊर्जा के वंशज हैं, और मानव शरीर उनसे संबंधित इन तत्वों से बना है और पांच इंद्रियों में से प्रत्येक से जुड़ा हुआ है।

वेदों को सृष्टि विज्ञान का प्रमुख ग्रंथ माना गया है। वेदों में पर्यावरण संतुलन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी का स्तवन अनेक स्थलों में किया गया है। अग्नि को पिता के समान कल्याणकारी कहा गया है। 'अग्ने। सूनवे पिता इव नः स्वस्तये आ सचस्व' ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि तत्व के स्तवन से होता है।

ऋग्वेद(1.23.248)में जल के महत्व को इस प्रकार बताया गया है –'अप्सु अन्तःअमृतं, अप्सु भेषजं' अर्थात जल में अमृत है,जल मेंऔषधि गुण विद्यमान रहते हैं अस्तु, आवश्यकता है जल की शुद्धता, स्वच्छता बनाये रखने की ।

ऋग्वेद(1,555,1976) के ऋषि का आशीर्वादात्मक उदगार हैदृ'पृथ्वीःपूःच उर्वी भव –अर्थात समग्र पृथ्वी संपूर्ण परिवेश परिशुद्ध रहे, नदी, पर्वत, वन, उपवन सब स्वच्छ रहें, गांव, नगर सबको विस्तृत और उत्तम परिसर प्राप्त हों तभी जीवन का सम्यक विकास हो सकेगा।

यजुर्वेद में यज्ञ विधियां एवं यज्ञ में प्रयोग किये जाने वाले मंत्र हैं। यज्ञ स्वयं एक चिकित्सा है। यज्ञ वायु मंडल को शुद्ध कर रोगों और महामारियों को दूर करता है। अथर्ववेद में आयुर्वेद का अत्यंत महत्व है। अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धति एवं जड़ी बूटियां तथा शल्य चिकित्सा व विभिन्न रोगों का वर्णन है। सामवेद में ऐसे मंत्र मिलते है जिनसे ये प्रमाणित होता है कि वैदिक ऋषियों को ऐसे वैज्ञानिक सत्यों का ज्ञान था जिनकी जानकारी आधुनिक वैज्ञानिकों को सहस्राब्दियों बाद प्राप्त हो सकी।

वैदिक साहित्य में प्राकृतिक पदार्थों से कल्याण की कामना को स्वस्ति कहा गया है, जिसका आचार्य सायण "अविनाशं क्षेमं–सुरक्षित क्षेम" अर्थ किया है। इस नैरुक्त चिंतन है दृ अलब्धस्य लाभो योगः, प्राप्तस्य संरक्षणं क्षेमः दृ अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति योग है तथा प्राप्त का संरक्षण क्षेम। अतः सहज सुलभ प्राकृतिक पदार्थों का सुरक्षित रहना ही स्वस्ति है। इसीलिए हमारे मनीषियों नेउद्घोष किया है दृ "ॐ द्यौ शान्तिः, अंतरिक्ष शांतिः, पृथ्वी शांतिः, आपःशांतिः।" अतः मनुष्य को अपने मन ,वचन और आचरण एवं व्यवहार से प्रकृति के कोप को शांत करके ही अपना जीवन सुखी और शांत बना सकता है।

विष्णु पुराण का एक उद्धरण :–

"जिस प्रकार व्यापक रूप से फैला हुआ नरगोधा (बरगद के लिए संस्कृत) का पेड़ एक छोटे से बीज में संकुचित होता है, उसी प्रकार विघटन के समय, संपूर्ण ब्रह्मांड उसके अंकुर के रूप में आप में समाहित होता है; जैसे नरगोधा बीज से अंकुरित होता है, और केवल एक अंकुर बन जाता है और फिर बुलंदी की ओर बढ़ता है, वैसे ही निर्मित दुनिया आपसे आगे बढ़ती है और विशालता में फैलती है।

रामायण, महाभारत और भगवद गीता :–

वेदों के पश्चात रामायण और रामचरित मानस की बात करें तो महर्षि वाल्मीकि एवं तुलसीदास जी ने मनुष्य के जीवन को सात्विक और सुंदर बनाने के लिए प्राकृतिक पर्यावरण की विशुद्धता पर विशेष बल दिया है तभी मानव जीवन आनंदकारी हो सकेगा। इन्होंने प्राकृतिक अवयवों को उपभोग की वस्तु नहीं मानते हुए समस्त जीवों और वनस्पतियों के बीच अटूट प्रेम सम्बन्ध भी स्थापित किया है।

हिंदू धर्म वृक्ष संरक्षण की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पर भी जोर देता है। महाकाव्य रामायण में, रावण आपदा का सामना करने पर निम्नलिखित कहता हैः मैंने वैशाख के महीने में कोई अंजीर का पेड़ नहीं काटा, तो मुझे यह दुर्भाग्य क्यों भुगतना पड़ रहा है? यह इस बात का अच्छा उदाहरण है कि हिंदू पेड़ों के साथ कैसा व्यवहार करते थे, जो हमारे पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। प्राचीन भारतीय कवि कालिदास के शब्दों में, हिमालय एक महान देवता है, एक महान आध्यात्मिक उपस्थिति है जो दुनिया की महानता को मापने के लिए एक मापने वाली छड़ी की तरह पश्चिम से पूर्व तक फैली हुई है।

महाभारत से पता चलता है कि प्रकृति के मूल तत्व – पहाड़ उसकी हड्डियाँ हैं, पृथ्वी उसका मांस है, समुद्र उसका खून है, आकाश उसका पेट है, हवा उसकी सांस है, और अग्नि (अग्नि) उसकी ऊर्जा है – बनाओ ब्रह्मांडीय अस्तित्व तक। प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों का प्राथमिक संदेश यह है कि मनुष्य को उसके प्राकृतिक परिवेश से अलग नहीं किया जा सकता है और पृथ्वी और मनुष्य के बीच एक माँ और उसके बच्चे के समान संबंध है। धार्मिक समारोहों में, पेड़ों के रोपण और संरक्षण को पवित्र बनाया जाता है।

भगवद गीता में कृष्ण ने संसार की तुलना अनंत शाखाओं वाले एक बरगद के पेड़ से की है जहाँ सभी पशु प्रजातियाँ, मनुष्य और देवता विचरण कर सकते हैं। भारतीय चिंतन वृक्षों और वनों से परिपूर्ण है। हिंदू अनुष्ठान में विभिन्न पेड़ों, फलों और पौधों का विशेष महत्व है। सदियों से, हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों, कहानियों और लिपियों ने प्रकृति को देवता मानकर इसकी रक्षा के मूल्य पर जोर देने का प्रयास किया है। भगवान कृष्ण भगवद गीता (9.26) में कहते हैं: "पात्रम पुष्पम फलम तोयम्, यो मेय भक्त्या प्रयच्छति तदाहम भक्त युपहृतम असनामि प्रयतात्मनः।"

मैं एक पत्ता, फूल, फल या जल या जो कुछ भी भक्तिपूर्वक अर्पित किया जाता है उसे स्वीकार करता हूं।

पूजा के दौरान भगवान को पवित्र नारियल का पेड़ और नारियल अर्पित किया जाता है। पूजा और शुभ आयोजनों के दौरान आम के पत्तों का उपयोग उत्सव के रूप में किया जाता है। पुष्प पूजा और पात्र पूजा के लिए पूजा के दौरान सभी पौधों के फूल और पत्तियों का उपयोग किया जाता है। हिंदू कमल को एक पवित्र पौधा और फूल मानते हैं। "तुलसी" का पौधा, जिसे अक्सर भारतीय तुलसी के रूप में जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में कार्य करता है।

मनुष्यों और अन्य जीवित चीजों के अस्तित्व और कल्याण के लिए, प्राचीन हिंदू धर्म में पर्यावरण संरक्षण पर बहुत ध्यान दिया गया था, लेकिन अन्य संस्कृतियों ने भी एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने और पर्यावरण की रक्षा पर जोर दिया। अपने धार्मिक सिद्धांतों के माध्यम से, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और सैम ने भी पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण की वकालत की।

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म, जो वैदिक युग के बाद भारत में आया, ने सत्य, अहिंसा और पौधों, पेड़ों और अन्य वनस्पतियों और जीवों सहित सभी जीवित चीजों के प्रति प्रेम पर जोर दिया। प्रत्येक बौद्ध से अपेक्षा की जाती थी कि वह प्रत्येक वर्ष एक पेड़ लगाए और उसके पूर्ण परिपक्व होने तक उसकी देखभाल करे। किसी भी प्रकार के शिकार या जानवरों, पक्षियों या अन्य जीवित चीजों की हत्या को सख्ती से

प्रतिबंधित किया गया था क्योंकि यह अहिंसा, या अहिंसा की श्रद्धेय अवधारणा का उल्लंघन करता था। प्रत्येक बौद्ध को बौद्ध शिक्षा का उत्साहपूर्वक पालन करने की आवश्यकता थी कि सभी जीवित चीजों के लिए करुणा दिखायी जानी चाहिए।

महान राजा अशोक को जीवित चीजों के प्रति दया के कारण अपना सिंहासन त्यागने और अहिंसा का उपदेश देने के लिए जाना जाता है। शायद पहले राजा या रानी ने पौधों के संरक्षण और संरक्षण के लिए नर्सरी की स्थापना की और बीमार जानवरों और मवेशियों की देखभाल और उपचार के लिए पशु चिकित्सा सुविधाओं की स्थापना की। अपने पूरे क्षेत्र में, उन्होंने राजमार्गों के दोनों ओर पेड़ लगाने के लिए जबरदस्त अभियान चलाया।

- ★ बौद्ध धर्म पूर्णतः प्रेम, सद्‌भाव तथा अहिंसा पर आधारित है।
- ★ बौद्ध धर्म 'प्रतीत्यसमुत्पाद' पर आधारित है जिसे करण–कारण का सिद्धांत भी कहते हैं। इसके अनुसार, प्रत्येक कार्य का प्रभाव होता है। इसे हिंदू धर्म के कर्म के सिद्धांत के समान माना जा सकता है अर्थात् मानव के व्यवहार का प्रभाव उसके पर्यावरण पर पड़ता है।
- ★ बौद्ध धर्म साधारण जीवनशैली को बढ़ावा देता है, जो सतत–पोषणीय विकास के लिये आवश्यक है। यह संसाधनों के अतिदोहन को वर्जित करता है।
- ★ बौद्ध धर्म सभी प्राकृतिक जीवों की परस्पर निर्भरता में विश्वास करता है और इसमें सभी जीव–जंतु, वनस्पतियाँ, नदी, पर्वत, जंगल आदि शामिल हैं।

जैन धर्म

चूँकि पौधे और जानवर प्राकृतिक संसाधन हैं जो मानव जीवन का समर्थन करते हैं, जैन धर्म भी उनके नुकसान से घृणा करते हैं। बौद्ध धर्म की तरह, जैन धर्म ने जानवरों, पक्षियों, मछलियों, कीड़ों सहित सभी जीवित चीजों के लिए सत्य, अहिंसा और करुणा को उच्च मूल्य दिया। वे पौधों और पेड़ों के विनाश को हिंसा का कार्य मानते थे जो अहिंसा सिद्धांत के विरुद्ध था क्योंकि उन्हें लगता था कि उनका भी अस्तित्व है। प्रत्येक जैन को पंद्रह प्रतिज्ञाएँ करने की आवश्यकता होती थी, जैसे कर्म, कर्मदान, वन कर्म, स्फोत्रिक कर्म, निरलंचन कर्म, असोतिपासन कर्म, आदि। ये सभी किसी भी प्रकार के प्रदूषण से पर्यावरण की रक्षा के लिए समर्पित थे।

जैन धर्म में अहिंसा को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है तथा किसी भी जीव–जंतु, वनस्पति आदि को नुकसान पहुँचाना वर्जित माना गया है।

जैन धर्म में पंचमहाव्रत है– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य। जैन धर्म को मानने वाले जीवन के सभी आयामों में इन पंचमहाव्रतों का अनुपालन करते हैं।

अतः जैन धर्म के अनुयायियों के लिये प्रकृति व इसके सभी जीव जंतुओं को सामान माना गया है तथा इनका संरक्षण और इनके प्रति समान व्यवहार करना इस धर्म की मूल शिक्षा है।

सिख धर्म

सिख धर्म के धार्मिक सिद्धांतों में भी यह स्वीकार किया गया है कि पर्यावरण का संरक्षण इस धर्म के प्रत्येक अनुयायी के पवित्र कर्तव्यों में से एक है। गुरु नानक बानी में पवित्र धार्मिक प्रवचन में जोगा और जगत के जल, अग्नि, वायु, आकाश और भगवान के प्राकृ तिक संसाधनों से दुनिया के निर्माण का उल्लेख है। यह प्राचीन धार्मिक मान्यता के अनुरूप है कि मानव शरीर पंचतत्व से बना है और इन तत्वों (तत्वों) के बिना कोई भी जीवन पृथ्वी पर मौजूद नहीं हो सकता है। सिख धर्म का मानना है कि ईश्वर की आसन्न आत्मा प्रकृति में मौजूद है। सभी जीवित प्राणी और मानव कार्य सर्वशक्तिमान की इच्छा से निर्देशित होते हैं। इसलिए, जानवरों, पौधों, पेड़ों, नदियों, पहाड़ों की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का एक कर्तव्य है जो पृथ्वी पर मानव अस्तित्व और जीवन के लिए प्राकृतिक स्रोत हैं।

- ★ सिक्ख धर्म के अनुसार, संसार में स्थित सभी वस्तुएँ ईश्वर की इच्छा के अनुरूप ही कार्य करती हैं तथा ईश्वर उनकी रक्षा करता है। सिक्ख धर्म की शिक्षा दिखावे के लिये किये गए व्यय का निषेध करती है।
- ★ सिक्ख धर्म के पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' के अनुसार, सभी जीव–जंतु, वृक्ष, नदी, पर्वत, समुद्र आदि को ईश्वर का रूप माना गया है।

इस्लाम

इस्लामी आस्था के अनुयायी भी पारस्परिक सह–अस्तित्व के दिव्य नैतिक सिद्धांतों के आधार पर प्रकृति के साथ शांति में विश्वास करते हैं। इसका मानना है कि मनुष्य को प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के साथ संतुलन बनाए रखना चाहिए जो प्रकृति के मूल्यवान उपहार हैं जिन्हें विनाश या लूट से संरक्षित करने की आवश्यकता है। किसी भी प्रकार के प्रदूषण से पर्यावरण की सुरक्षा इस्लामी धार्मिक दर्शन का एक प्रमुख सिद्धांत रहा है। इसका मानना है कि अल्लाह (ईश्वर) ने पृथ्वी का निर्माण किया है और इसमें पहाड़, पहाड़ियों, घाटियों, नदियों, झीलों, झरनों, जंगलों, चरागाहों, मैदानों आदि को स्थापित किया है, जिसमें इंसानों के साथ–साथ पशु, पक्षी और हजारों अन्य जीवित प्राणी रहते हैं। मानवजाति. इनमें से प्रत्येक का पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में एक कार्य और भूमिका है। पर्यावरण संरक्षण की इस्लामी अवधारणा के अनुसार, मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों के मात्र ट्रस्टी हैं जिन्हें उन्हें समाज के लाभ के लिए संरक्षित करना चाहिए।

- ★ इस्लाम के अनुसार, पृथ्वी का मालिक खुदा है तथा यहाँ इंसान की भूमिका खलीफा अर्थात् खुदा के न्यासी (ज्तनेजमम वि ळवक) की है एवं इंसान का कार्य पृथ्वी और इसके विभिन्न अवयवों की रक्षा करना है।

- ★ इस्लाम की पवित्र पुस्तक कुरान के अनुसार, सृष्टि की रचना जल से हुई है तथा जल को व्यर्थ करना इस्राफ (पाप) है। इसके अलावा किसी भी प्राकृतिक संसाधन का व्यर्थ उपयोग करना इस्लाम में वर्जित माना गया है।
- ★ कुरान में 6,000 से अधिक आयते हैं जिनमें 500 से अधिक प्राकृतिक घटनाओं से संबंधित है। इन घटनाओं में अधिकतर पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा, पौधे, जल आदि की चर्चा की गई है। इस्लाम में जल के सीमित उपयोग पर ज़ोर दिया जाता है।

ईसाई धर्म

मानव समाज की समग्र प्रगति के लिए पर्यावरण की शुद्धता की आवश्यकता की वकालत वेटिकन सिटी के पोप पॉल षष्टम ने भी की है। ईसाइयों को शुद्धि के संकेत के रूप में पानी में बपतिस्मा दिया जाता है; इसलिए, उनका दृढ़ विश्वास है कि पानी की शुद्धता हर कीमत पर बनाए रखी जानी चाहिए। बाइबल मनुष्य को आदेश देती है कि वह प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग न करे क्योंकि वे पारिस्थितिकी संतुलन और स्वच्छ पर्यावरण को बनाए रखने में बेहद उपयोगी हैं। प्राकृतिक संसाधन ईश्वर द्वारा मानवजाति को उसके अस्तित्व के लिए दिए गए उपहार हैं और इसलिए, पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए उन्हें संरक्षित करना होगा।

- ➢ इसाई धर्म का मत है कि सभी जीवों की रचना ईश्वर के प्रेम का रूप है तथा मानव को जैविक विविधता तथा ईश्वर के निर्माण को नष्ट करने का अधिकार नहीं है।
- ➢ इस्लाम की भाँति ही इसाई धर्म के अनुसार भी मनुष्य को सृष्टि के अन्य जीवों की रक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई है।
- ➢ इसके अलावा यह संसाधनों के सीमित उपयोग और उनके संरक्षण पर ज़ोर देता है।

यहूदी धर्म :–

हिब्रू बाइबिल तोराह (ज्वतीे) में प्रकृति के संरक्षण के लिये अनेक नैतिक बाध्यताएँ दी गई हैं। तोराह के अनुसार, "जब ईश्वर ने आदम को बनाया, उसने उसे स्वर्ग के बगीचे दिखाए और कहा मेरे कार्यों को देखो, कितना सुंदर है ये? मैंने जो भी बनाया है वह सब तुम्हारे लिये है। तुम्हें इसकी रक्षा करनी है और यदि तुमने इसे नष्ट किया तो तुम्हारे बाद इसे ठीक करने वाला कोई नहीं होगा।"इस प्रकार यहूदी धर्म में भी पर्यावरण संरक्षण को विशेष महत्त्व दिया गया है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु धार्मिक संस्थाओं द्वारा प्रयास :–

ऊपर दिये गए बिंदुओं से यह पता चलता है कि विश्व के सभी धर्मों में पर्यावरण को संरक्षित करने की बात कही गई है। प्रकृति के संरक्षण के लिये विभिन्न धार्मिक समूहों द्वारा वैश्विक या स्थानीय स्तर पर कई प्रयास किये जा रहे हैं। पाकिस्तान में स्थित कब्रगाहों में प्राचीन वृक्षों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं क्योंकि इनको काटना गुनाह माना जाता है, लेबनान के मैरोनाईट चर्च ने हरीसा के जंगलों को पिछले 1,000 वर्षों से संरक्षित रखा है, थाईलैंड के बौद्ध भिक्षुओं ने संकटग्रस्त जंगलों की रक्षा हेतु वहाँ छोटे–छोटे विहारों की स्थापना की है तथा उसे को पवित्र जंगल घोषित किया गया है।

- ★ इसके अलावा जर्मनी के 300 चर्चों ने स्थानीय समुदायों के सहयोग से सौर ऊर्जा प्रणाली अपनाई है तथा वृहत स्तर पर इसका लगातार प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। अमेरिका में रहने वाले अफ्रीकी मूल के लोगों द्वारा क्वान्ज़ा त्यौहार प्रकृति संरक्षण का एक उपयुक्त उदाहरण है।
- ★ वर्ष 1986 में इटली के शहर असीसी में विश्व वन्यजीव कोष द्वारा 'असीसी घोषणा' का आयोजन किया गया। इसमें विश्व के पाँच प्रमुख धर्मों (इसाई, हिंदू, इस्लाम, बौद्ध तथा यहूदी) के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था ताकि वे इस मुद्दे पर सुझाव प्रस्तुत कर सकें कि उनके धर्मों में प्रकृति संरक्षण हेतु क्या प्रावधान है तथा किस प्रकार वे योगदान कर सकते हैं?
- ★ वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न धर्मों के सहयोग से अलायंस ऑफ रिलिजन एंड कंसर्वेशन नामक संगठन की स्थापना वर्ष 1995 में की गई थी।
- ★ ॅथ तथा ।त्ब के सहयोग से 'लिविंग प्लैनेट कैंपेन' नामक एक मुहिम शुरू की गई। इसके तहत विश्व के प्रमुख धर्मों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की तथा उनकी इस प्रतिबद्धता को 'जीवंत पृथ्वी के लिये पवित्र उपहार' का नाम दिया गया।
- ★ इस अभियान के तहत वकालत, शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि, संपत्ति, जीवनशैली तथा मीडिया के क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करना शामिल है।
- ★ इस प्रतिबद्धता के तहत जैन धर्म ने अंतर्राष्ट्रीय जैन व्यापार पुरस्कार प्रारंभ किया है। इसके तहत उन कंपनियों को पुरुस्कृत किया जाता है जिन्होंने पर्यावरणीय प्रभावों को कम करते हुए प्रगति की है। इसी प्रकार स्वीडन के लूथरन चर्च के सहयोग से स्वीडन में नेशनल फॉरेस्ट स्टेवर्डशिप काउंसिल की स्थापना की गई।

निष्कर्ष :–

भारत में पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन परंपरा रही है। अधिकांश प्राचीन ग्रंथ हमें सिखाते हैं कि प्रकृति की रक्षा करना किसी भी समाज के प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। यही कारण है कि लोग सदैव प्रकृति की वस्तुओं की पूजा करते आये हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में वृक्ष, जल, भूमि और जीव–जंतुओं का महत्वपूर्ण उल्लेख है। हिंदू धर्म में, हम पाते हैं कि वेदों, उपनिषदों और हिंदू धर्म के अन्य प्राचीन ग्रंथों में पेड़–पौधों और वन्य जीवन को बहुत महत्व दिया गया है और मनुष्यों के लिए भी उनका मूल्य बताया गया है।. वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों, रामायण, महाभारत, गीता, कहानियों सहित पौराणिक साहित्य, सामाजिक और नैतिक संहिताओं और राजनीतिक नियमों नामक हिंदू धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि निम्नलिखित सामान्य मार्गदर्शक सिद्धांत थे जिनका सभी को पालन करना चाहिए। उनके दैनिक जीवन में. प्राचीन काल में हमारी संस्कृति में पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर सुविकसित तंत्र स्थापित था। मानव आचरण को पर्यावरण की सुरक्षा के अनुरूप संशोधित किया गया। हमारी प्राचीन कानूनी संहिताएं जैसे वेद, उपनिषद, पुराण आदि पर्यावरण की रक्षा करती थीं। हमें अपनी प्राचीन पर्यावरण संरक्षण प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है। इसी तरह विभिन्न स्तर पर सभी धर्मों के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण के लिये अनेक कार्य किये जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1ण डॉ. रेगा सूर्या राव (2006)। पर्यावरण कानून पर व्याख्यान एशिया लॉ हाउस (हैदराबाद)।
2ण एस शांताकुमार (2015)। पर्यावरण कानून का परिचय (दूसरा संस्करण): लेविस नेवीज़।
3ण डॉ. एन.वी. परांजपेः भारत में पर्यावरण कानून और प्रबंधन (2015 संस्करण) थॉमसन रॉयटर्स, कानूनी।
4ण डॉ. सुरेंद्र कुमार पचौरी (2006)। उद्योग पर पर्यावरण कानूनों का प्रभाव। आदित्य बुक्स प्रा. लिमिटेड
5ण डॉ. एस.आर. मेयनीः पर्यावरण अध्ययन प्रकाशित पुस्तक 2020
6ण अर्चना भट्टाचार्जीः पर्यावरण क्षरण; रबिंदरनाथ टैगोर की चयनित कविताओं में मुद्दे और चिंताएँ, गैलेक्सी; अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक जर्नल 2020
7ण पर्यावरण पर अतिउर रहमान टैगोर के विचार, 2021
8ण कन्नन, वेदविकास, वैदिक प्रबंधन, वैदिक विज्ञान और वैदिक संस्कृति का ऑनलाइन भंडार
9ण एस शांताकुमार (2015)। पर्यावरण कानून का परिचय (दूसरा संस्करण): लेविस नेवीज़।
10ण डॉ. एन.वी. परांजपेः भारत में पर्यावरण कानून और प्रबंधन (2015 संस्करण) थॉमसन रॉयटर्स, कानूनी।
11ण डॉ. सुरेंद्र कुमार पचौरी (2006)। उद्योग पर पर्यावरण कानूनों का प्रभाव। आदित्य बुक्स प्रा. लिमिटेड ।
12ण डॉ. एस.आर. मेयनीः पर्यावरण अध्ययन 2019
13ण डॉ. पी.एस. जसवाल और वी. जसवालः पर्यावरण कानून।
14ण ऋग्वेद(1.23.248)
15ण ऋग्वेद(1,555,1976)